अंतराल

(पुस्तक के कुछ अंश)

अपने कार्यालय में बैठा अर्नब अपने दैनिक कार्यों के निस्तारण में लगा था। अचानक निगाह घड़ी पर पड़ी । दोपहर के १:२५ बज चुके थे। मन में सोचा कि पहले काम निपटा लूँ। दो बजे लंच करूँगा। लगभग पाँच मिनट बाद उसका चपरासी कक्ष में प्रवेश किया और एक पर्ची पकड़ाते हुए बोला-" सर , ये मैम ज्वाइन करने आयी हैं।"

अर्नब अपनी कम्पनी में मैनेजिंग डाइरेक्टर(एच०आर०) के पद पर कार्यरत था। किसी भी नए अधिकारी या स्टाफ़ को ज्वाइन कराने की ज़िम्मेदारी उसी की थी। अर्नब ने पर्ची हाथ में ली। नाम पढ़ते ही उसका मन सशंकित हो गया। चपरासी से कहा-"बुलाऊँगा तो भेजना। प्रतीक्षा करने को बोलो।"

"अविका गर्ग" नाम पढ़ते ही अर्नब के मष्तिस्क के तार झनझना उठे। ये नाम जैसे उसके जीवन से गहरा जुडा हो। अतीत की धुँधली स्मृतियाँ अचानक से मूर्तिमान हो उठीं। गहरी साँस लेकर फिर साँस छोड़ते हुए मंद स्वर में बोला-"अविका"। आगे............

अपने कार्यालय में बैठा अर्नब अपने दैनिक कार्यों के निस्तारण में लगा था। अचानक निगाह घड़ी पर पड़ी । दोपहर के १:२५ बज चुके थे। मन में सोचा कि पहले काम निपटा लूँ। दो बजे लंच करूँगा। लगभग पाँच मिनट बाद उसका चपरासी कक्ष में प्रवेश किया और एक पर्ची पकड़ाते हुए बोला-" सर , ये मैम ज्वाइन करने आयी हैं।"

अर्नब अपनी कम्पनी में मैनेजिंग डाइरेक्टर(एच०आर०) के पद पर कार्यरत था। किसी भी नए अधिकारी या स्टाफ़ को ज्वाइन कराने की ज़िम्मेदारी उसी की थी। अर्नब ने पर्ची हाथ में ली। नाम पढ़ते ही उसका मन सशंकित हो गया। चपरासी से कहा-"बुलाऊँगा तो भेजना। प्रतीक्षा करने को बोलो।"

"अविका गर्ग" नाम पढ़ते ही अर्नब के मष्तिस्क के तार झनझना उठे। ये नाम जैसे उसके जीवन से गहरा जुडा हो। अतीत की धुँधली स्मृतियाँ अचानक से मूर्तिमान हो उठीं। गहरी साँस लेकर फिर साँस छोड़ते हुए मंद स्वर में बोला-"अविका" । फिर मन को तसल्ली देने के लिए सोचा-" ये दुनिया बहुत ही बड़ी है। यहाँ तो एक नाम के हज़ारों लोग होते हैं।" फिर मन को कड़ा कर क्षिप्रहस्त से कॉलबेल का बटन दबाया। "भेज दो मैम को" ऊँची आवाज़ में चपरासी को बोलकर जैसे अर्नब ने अपने मन के बोझ को ऊँचे स्वर से दबाने की कोशिश की हो।

चपरासी के दरवाज़ा खोलते ही लगभग ४०-४२ वर्ष की महिला ने कक्ष में प्रवेश किया। अविका दो देखते ही अर्नब की आँखें फटी की फटी रह गयीं। मन में सोचा " ये क्या ? जिस नाम को ख़ुद से अलग करने में काफ़ी संघर्ष किया , आज वो उसके सामने साक्षात् खड़ी थी।"

लेकिन ये क्या? कितना बदल दिया है समय ने? अविका की शोख़ , चंचल हँसी ने गम्भीरता का रूप ले लिया था। चेहरे की मासूमियत ने प्रौढ़ता का रूप ले लिया था। ऐसा प्रतीत होता था कि ज़िंदगी की ताप में वो असमय ही झुलस गयी है। उम्र दूगुना होने के साथ ही जैसे उसका शरीर भी दूना हो गया है। एक लम्बा अंतराल कितना बदल देता है ना-भाव को भी और स्वभाव को भी।

अर्नब इन्हीं ख़यालों में था , तभी अविका ने काँपती आवाज़ में बोला-" अरनब"। ...." केवल अर्नब नहीं , बल्कि अर्नब सर। आइये बैठिए अविका जी।" मन को कठोर करते हुए दृढ़ स्वर में अर्नब ने कहा।

अविका के बैठने के कुछ क्षण उपरांत अपने चेहरे पे ज़बरिया मुस्कान लाते हुए अर्नब ने कहा-" अविका जी ! इस कम्पनी में आपका स्वागत है। चूँकि आप पहले भी अन्य कम्पनी में कार्य कर चुकी हैं , तो आप एक कार्मिक के दायित्वों से परिचित ही होंगी। फिर भी कम्पनी के मैंनेजिंग डायरेक्टर की हैसियत से मुझे आपको कुछ आधारभूत बातें तो बतानी ही होंगी।"......" कम्पनी हमसे काम लेती है , जिसके बदले में हमें वेतन देती है । हमारा कर्तव्य है कि हम मिलने वाले वेतन को हम अपने काम से उचित ठहराएँ। अपने दायित्वों का सजगता एवं पूर्ण मनोयोग से निर्वहन करें। काम को हमेशा अपना साथी समझें, कभी भी इसे बोझ के रूप में न लें।"........." और हाँ, यहाँ किसी को ये पता नहीं चलना चाहिए कि हम लोग सहपाठी रह चुके हैं। हम लोग के संबंध व्यक्तिगत नहीं , अपितु व्यावसायिक ही रहेंगे। इस बात को ध्यान में रखिएगा कि व्यक्तिगत संबंध व्यावसायिक संबंध पर हावी न होने पायें।" अर्नब ने कहा।........" जी सर , बिलकुल। मैं भी यही चाहती हूँ कि व्यक्तिगत कारण व्यावसायिक संबंधों में अवरोध न उत्पन्न करें।" अविका ने कहा।

अर्नब ने अविका से कहा-" अब कल से काम पर तत्परता से लगिए। आज आराम कीजिए।"

कक्ष से बाहर निकल कर अविका निकट के गेस्ट हाउस की ओर चल पड़ी। थोड़ी देर में वो ख़यालों में खो गयी। "अर्नब राजपूत" नाम पटल पर दृष्टि पड़ते ही वो ख़ुश हो गयी थी। सोचा था कि कहीं साथ वाला अर्नब तो नहीं। अगर वही हुआ तो कितना अच्छा होगा न। अजनबी शहर में एक दोस्त तो रहेगा, ज़रूरत पड़ने पर साथ देगा।...लेकिन नहीं, वो तो यहाँ मेरा बॉस होगा। कहीं व्यक्तिगत कटुता का प्रतिकार न करने लगे। उसकी उच्च पदस्थ स्थिति से उसे तो उसका अपमान करने का अवसर भी प्राप्त होगा।..... मुलाक़ात के उपरांत उसके व्यवहार से वरिष्ठता का भाव प्रक्षेपित भी हुआ।...........

......तभी अचानक से अविका को हँसी आ गायी। " अरे ये अर्नब अब कैसा दिख रहा है। कितना मासूम सा दिखता था। क्लास के सभी लड़के उसे बच्चा कहके चिढ़ाते थे। बड़ों के बीच एक बच्चा भी है।....अब तो बड़े बाल , बड़ी मूँछे , मोटा चश्मा और रोबदार चेहरा। अपने व्यवहार से भी रोब दिखा रहा था। कहाँ मेरे पीछे-पीछे घूमता था। आज लग ही नहीं रहा था कि वही अर्नब है। व्यक्तित्व का ऐसा रूपांतरण भी हो सकता है, उसने तो कभी सोचा भी न था।"

इधर अविका से मिलने के बाद अर्नब का मन बेचैन हुआ था। ऑफ़िस के काम में उसका मन ही नहीं लग रहा था। बहुत देर तक ख़ुद से और काम से लड़ता रहा। परंतु वो पुरानी यादों से हार गया और ऑफ़िस छोड़ कर निकल गया। शहर के कोलाहल से दूर शान्ति की तलाश में झील के किनारे पहुँच गया। झील के तट पर बैठा हुआ पुरानी यादों के सागर में गोते लगाने लगा।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर स्नातक करने विश्वविद्यालय पहुँचा था। कितना अंतर्मुखी प्रवृत्ति का था वो। किसी से कोई बात नहीं। लड़कों से भी ख़ुद से कम ही बात करता था। लड़कियों के सामने तो जैसे उसकी ज़बान ही बंद हो जाती थी।....लड़के उसे किताबी कीड़ा कहके चिढ़ाया करते थे।....लड़कियाँ उसे म्यूट बॉय कहा करती। कुछ उसे गूँगा गुड्डा कहकर चिढ़ाया करतीं थीं।

ऐसे ही स्नातक प्रथम वर्ष की पढ़ाई पूरी हो गयी और सभी द्वितीय वर्ष में आ गए थे। द्वितीय वर्ष में उसकी अविका से दोस्ती हो गयी थी। ...अब अक्सर अविका से बातें हुआ करतीं। अविका हंसकर कहा करती-" अर्नब थोड़ा परिपक्व बनो। कब तक बच्चे बने रहोगे।....."

वो तो कम बोलता ही था। अविका से संवाद के समय भी अक्सर कम ही बोलता था। प्रायः उसके शब्द -" अच्छा या ओ०के० ही हुआ करते थे।"....." क्या यार अर्नब तुम अच्छा या ओ०के० के अतिरिक्त कुछ और नहीं जानते क्या? लगता है तुम्हें मुझसे बात करने में रुचि नहीं।" अविका बोला करती।...." अरे ऐसी बात नहीं। मुझे तुम्हारी मधुर आवाज़ सुनना अच्छा लगता है। कितनी मधुर आवाज़ है तुम्हारी।जैसे तुम्हारे बोल में मिश्री घुला हो। "वो बोला करता।

धीरे-धीरे वार्तालाप से उसके मन में अविका के प्रति कोमल भावनाओं का प्रस्फुटन होने लगा था, जो धीरे-धीरे गहन होता जा रहा था। अविका ही हर पल उसके ख़यालों में रहती। एकांत में भी जैसे वो अविका से वार्तालाप करता रहता। यहाँ तो उसे अपने भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर भी मिलता।....

लेकिन अविका तो शोख़ , चंचल और वाक्पटु लड़की थी। कोई भी उसकी ओर सरलता से आकर्षित हो जाता था। कई और लड़के भी उसके दोस्त थे। उनसे भी उसकी बातें होती थीं। ये देख अर्नब बेचारा घुटन महसूस करता। लेकिन कर क्या सकता था ? अविका को किस हैसियत से मना करना। अविका के प्रति भावनाओं के बेहद होने के बावजूद भी वो हद नहीं पार कर सका था।..... लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से बोल ही देता।" अविका तुम्हारे बहुत दोस्त हैं।"...." मेरे तो दोस्त ही होंगे ना

क्योंकि मैं दुश्मन नहीं बनाती। वैसे मैं ख़ुद से किसी से बात नहीं करती तुम्हारे अलावा।" अविका बोला करती।.....इससे उसके मन में ये भाव बढ़ती चली गयी कि अविका मुझे ही महत्व देती है।

लेकिन कभी-कभी वो लड़कों को उग्र प्रतिक्रिया दे दिया करता था। जब हमने सांस्कृतिक कार्यक्रम किया था तो उससे दुगुने शारीरिक शौष्ठव का क्लास का दादा टाइप लड़का गौरव अविका से बात कर रहा था। बाद में कैसे उसने गलियारे में गौरव को घूरा था। न जाने कैसे उसमें इतनी शक्ति आ गयी थी।....अरे हाँ उस कार्यक्रम में कैसे एक प्रोग्राम में दोनों से साथ रोल किया था।.....जब कार्यक्रम के फ़ोटोग्राफ़्स का ऐल्बम उसने अविका को दिया था , तो अविका ने हाथ में लेते ही ऐल्बम को चूम लिया था।......उसे ऐसा आभास हुआ था कि जैसे अविका ने ऐल्बम को नहीं अपितु उसे चूम लिया हो।

अविका तो अब अर्नब के जीवन का हिस्सा बन चुकी थी।......कभी कभी अर्नब सोचता था कि अविका के समक्ष अपने भावनाओं को प्रकट कर दे। फिर सोचता कि भावों को शब्दों में कैसे बाँधा जा सकता।.....ये तो अनुभूति का विषय है। मेरे भाव तो अविका तक पहुँच ही रहे होंगे। अविका तो इतनी समझदार है ही। अगर उसे मेरे भाव न भाते , तो मुझसे निश्चित रूप से दूरी बनाती । परंतु उसकी सन्निकटता इस बात का प्रमाण है कि उसे भी मेरे भाव स्वीकार हैं।

वक़्त अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ रहा था। अर्नब अब स्नातक अंतिम वर्ष में पहुँच चुका था। अविका से उसकी निकटता बढ़ती जा रही थी।......अविका भी शायद उसके मनोभावों को समझ रही थी। परंतु उसने भावों को अवरुद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया था।......शायद वो उसका भ्रम नहीं तोड़ना चाहती थी।....या एक वजह हो सकती है कि लड़कियों की महत्ता लड़कों के उनके प्रति आकर्षण से होती है.....तो वो इसे कम न करना चाह रही हो।.....

अर्नब ऐसे ही ख़यालों में खोया था। तभी याद आया कि अंतिम वर्ष का तेज़ी से गुज़रना कैसे उसे मंद कर रहा था।.....अब नया साल भी आना था और कुछ महीने बाद अंतिम वर्ष की परीक्षा और फिर बिछड़ने की तैयारी।....तो बिछड़ने के पहले ही क्यूँ न स्थायी संबंध बना लिया जाए।...नए साल का अवसर अर्नब के लिए उपयोगी लगा।....वर्ष के अंतिम दिन उसने कार्ड ख़रीदा। कार्ड में सीधा तो कुछ नहीं लिखा था परंतु शब्द बयान कर रहे थे भावों को।......" ज़िंदगी तब तक अर्थहीन

होती है, जब तक इसे कोई अर्थ प्रदान करने वाला न हो। वो तुम हो जिसने मेरे जीवन को अर्थवान बनाया।.....धन्यवाद मेरे जीवन का हिस्सा बनने के लिए।"

पहली जनवरी को ही कार्ड दिया सुबह-सुबह क्लास में पहुँचकर।....क्लास से निकलते वक़्त अविका ने कहा था-" कितना प्यारा कार्ड दिया । बिलकुल अपनी तरह।"

ऐसी प्रतिक्रिया सुनकर तो अर्नब मान बैठा था कि अविका के हृदय में भी उसके प्रति वही भाव है, जो उसके हृदय में अविका के प्रति। अब तो उसकी ख़ुशियों को पंख लग गया था।

अर्नब अविका की वार्तालाप तो यथावत जारी रही। लेकिन वो कितना घुटन में रहता था। अपनी भावो को स्पष्ट रूप से न प्रकट कर पाने के कारण। अविका के भाव भी तो उसके समक्ष स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हुए थे। अनुमान के आधार पर ही तो अभी निष्कर्ष पर था।परंतु अनुमान तो सदा सत्य नहीं होते ना।.....तो उसने एक दिन निर्णय किया। क्लास छूटने के उपरांत वो अविका का पीछा करने लगा था।....वो सहेलियों के साथ थी। कुछ दूरी पर वो पीछा कर रहा था।....जैसे ही वो अकेले हुई , अपनी चाल को अतितीव्र करता हुआ , वो अविका के पास पहुँचा था।........तीन बज रहे थे।..." हेलो , अविका।"...." हाय! तुम यहाँ कहाँ।"अविका ने कहा।...." अरे कुछ नहीं, टहल रहा।" वो बोला था।....." सुबह टहला जाता है, इस वक़्त नहीं।" अविका ने हँसते हुए कहा था।......" अरे जब जागो तभी सवेरा।"उसने भी हँसते हुए जवाब दिया था।लेकिन उसका धैर्य जवाब दे दिया था।....हो कहने आया था , कह नहीं पाया और लौट आया थके क़दमों के साथ।

अब क्या किया जाए। अचानक उसे विचार आया, टेलीफ़ोन पर बोलते हैं। ये सोचकर वो सार्वजनिक दूरभाष केन्द्र की ओर भागा था।....चार बार उसके छात्रावास का नम्बर डायल कर काट दिया था। पाँचवी बार साहस कर मिला पाया था।....उधर से आवाज़ आने पर बोला था" हेलो, कमरा नम्बर ३५ से अविका को बुला दीजिए।".....लगभग पाँच मिनट बाद अविका आयी। इन पाँच मिनटों में वो पसीना-पसीना हो गया था। बीच में तो फ़ोन काटने को भी सोचा था। लेकिन आज तो उसे इस पार या उस पार करना था.....पाँच मिनट बाद" हेलो कौन"...." मैं अर्नब बोल रहा।....अविका बहुत दिनों से तुम्हें कुछ बताने को सोच रहा।दरअसल मैं आई लव यू।"....ये बोलकर ख़ामोश हो गया था।...." कुछ क्षण की ख़ामोशी के बाद अविका ने पूछा था-" अब फ़ोन रखें।" ..." हाँ , रख दो।" उसने कहा था।

फ़ोन रखकर पी०सी०ओ० मालिक को भुगतान कर अर्नब वापस लौटने लगा। अनिश्चय की स्थिति होने के कारण अर्नब संशय भाव से ग्रस्त था। अर्नब सोच रहा था कि जीवन के प्रश्न इतने जटिल होते हैं कि एक पल में हल हो ही नहीं सकते। अर्नब अपने भाव से अविका को अवगत तो करा चुका था , परंतु अविका के भाव तो अभी भी अप्रकट थे।

मानव-प्रवृति कुछ इस प्रकार की होती है कि वह हर परिणाम के स्वयं के अनुकूल होने की सोच रखता है। इसी भाव से अर्नब ने स्वयं से कहा-" ..यदि अविका को मेरा मेरा निवेदन अस्वीकार्य होता, तो वो तत्क्षण उग्र प्रतिक्रिया देती। परंतु उसने तो ऐसा कुछ भी नहीं कहा। इससे प्रतीत होता है कि उसे मेरा निवेदन स्वीकार है।"

परंतु स्पष्ट परिणाम ज्ञात करने के लिए अर्नब के पास प्रतीक्षा के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प उपलब्ध नहीं था। अगले दिन कक्षा में भी अविका ने कुछ प्रकट नहीं किया। ये ज़रूर था कि उससे कटी-कटी थी।

मनुष्य जब अनिर्णय की स्थिति में रहता है, तो उसके भीतर एक बेचैनी रहती है। प्रत्येक क्षण परिणाम के विषय में सोचता है। अन्य विषय में उसका मन ही नहीं लगता है। कुछ ऐसी ही स्थिति अर्नब की थी। एक-एक पल बोझ की तरह थे। समय का चक्र उसके लिए थमा सा था।

ऐसे ही तीन-चार बड़े दिन उसके गुज़रे। एक दिन शिक्षक के न आने के कारण कक्षा बाधित थी। छात्र-छात्राएँ इधर-उधर घूम रहे थे। अर्नब के मित्रों ने भी उससे कहीं घूमने चलने को कहा। अर्नब भी साथ हो लिया। विचरण करते हुए। मित्रगण के साथ वो कैंटीन पहुँचा। वहाँ अविका स्वर्णिमा के साथ पहले से ही विद्यमान थी। साथ में मेहुल, सिद्धार्थ और रचित भी थे। वो तीनों अन्य फ़ैकल्टी के विद्यार्थी थे। अविका ने अपने अन्य सहपाठियों की ओर देखा। शायद उन्हें वहाँ पाकर उसे अच्छा नहीं लगा। सहसा उसकी नज़र अर्नब से मिली। अर्नब को देखकर उसने बुरा सा मुँह बनाया। व्यक्ति बिना बोले भी बहुत कुछ बोल सकता है। अविका की मुख-मुद्रा से ही अर्नब को उसके प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो गया था। उसका स्वप्न-महल एक पल में ही भरभराकर ढह गया। ऐसा लगा कि उसे अग्नि-कुंड में डाल दिया गया हो।

मित्रों के समक्ष वो अपनी पीड़ा को भी अभिव्यक्त नहीं कर सकता था। जल्दी से चाय पीकर वो अस्वस्थता का बहाना करके अपने कमरे पर लौट आया। कमरे में आते ही निराश, हताश और

पराजित भाव से वह बिस्तर पे ढह गया था। यानी उसकी आशंका सही निकली। रचित ही अविका का ब्वाय- फ़्रेंड है।

अर्नब के जीवन का अब कठिन दौर प्रारम्भ हो चुका था। जिसे वह अपनी ज़िंदगी बना बैठा था, उसकी ज़िंदगी में उसके लिए कोई स्थान नहीं था। एक सप्ताह किसी तरह गुज़रे। उसके दुःख का एक मात्र साथी शलभ था। शलभ को उसकी पीड़ा का अहसास था।शलभ कहा करता-" देखना अर्नब , तुम्हें नकार कर अविका जीवन में कभी ख़ुश नहीं रह पाएगी।" अर्नब कहता-" ऐसा न कह यार! मुझे तो उसकी ख़ुशी ही चाहिए। चाहे मेरे साथ हो या ना हो।"

एक दिन शलभ ने कहा-" यार, माँ निर्मला आ रही हैं। सुना है , जो भी उनका आशीर्वाद प्राप्त करता है, उनकी मुराद पूरी हो जाती है।" शायद मार्क्स ने सही कहा है कि धर्म कमज़ोरों का हथियार है। व्यक्ति जब किसी कार्य को स्वयं कर पाने में असफलता प्राप्त करता है, तो वह अलौकिक शक्तियों की शरण लेता है। शलभ की बात सुनकर अर्नब की आँखों में एक चमक आ गयी। वो चल पड़ा था माँ निर्मला के कैम्प में। पाँच घंटे पंक्ति में लगने के बाद उसे माँ निर्मला का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। परंतु उसके जीवन का परिणाम किसी अन्य के आशीर्वाद से कहाँ परिवर्तित हो सकता था। वो तो केवल अविका की इच्छाओं से ही हो सकता था, जो होना न था।

अर्नब के दिन किसी तरह गुज़र रहे थे। वक़्त कभी पंख लगा के उड़ता है, लेकिन उसके लिए तो वक़्त जैसे ज़ंजीरों में जकड़ा हो, आगे बढ़ ही नहीं रहा। सबके सामने वो संयत रहने का प्रयास करता। परंतु कोई कितना भी क्यूँ न छिपाए, अंतर्मन के भाव चेहरे पर प्रकट हो जाते हैं।

उससे लोग पूछा करते-" यार अर्नब, आजकल तुम कुछ परेशान दिख रहे हो।" अर्नब फीकी मुस्कान से धीमे स्वर में उत्तर दिया करता-" ऐसा कुछ नहीं है। मैं उम्र के उस पड़ाव पर आ चुका हूँ, जहाँ से व्यक्ति के कैरीअर की दिशा निर्धारित होती है। ऐसे में ब्यक्तित्व में गम्भीरता का संक्रमण होना स्वाभाविक है।"

दिन ऐसे ही गुज़र रहे थे कि अचानक एक दिन अतुल उसके पास आया और पूछा-" भैया, आपका मेहुल से कोई विवाद हुआ है क्या? मुझसे बोल रहा था कि अर्नब मुझे मारने को बोले तो मत कुछ करना। मुझसे समझौता करा दो।" अतुल और अनिल दो भाई थे और दोनों ही दबंग क़िस्म के थे। इस बात से अविका भी अवगत थी।

अर्नब बोला-“ ऐसा तो कुछ भी नहीं है। मेरी तो मेहुल से आज तक बात ही नहीं हुई, तो लड़ाई का प्रश्न ही नहीं उठता।” अतुल के जाने के उपरांत अर्नब सोच में पड़ गया कि मेहुल ने ऐसा क्यूँ कहा? काफ़ी सोच-विचार के उपरांत वाह इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि रचित नहीं अपितु मेहुल अविका का बॉय फ्रेंड है।..... विवशता के उस दौर से बड़ी मुश्किल से अर्नब निकल पाया था और फिर दूसरे शहर में एम०बी०ए० में दाख़िला ले लिया था।

अतीत की दुनिया से बाहर निकल कर अर्नब ने सोचा कि अब तो वर्तमान दायित्व का निर्वहन करना ज़्यादा आवश्यक है और घर की ओर निकल पड़ा।

अगले दिन ९.५५ पर अर्नब कार्यालय उपस्थित हो गया था। अविका थोड़ा विलम्ब से आयी थी। उसके पूर्व दो-तीन कर्मचारी आ गए थे। अविका १०.१० पे आयी और अर्नब से बोली-“ गुड मोर्निंग सर। सॉरी थोड़ा विलम्ब हो गया।”......” कोई बात नहीं। लेकिन ध्यान रखिएगा कि उपस्थिति में थोड़ा विलंब चल सकता है, परंतु कार्य में नहीं।”अर्नब ने कहा।.....”इसमें आपको निराशा नहीं मिलेगी।अभी आप मेरे कार्य से परिचित नहीं हैं!

...” लोगों की भावनाओं से खेलना ही तुम्हारा कार्य है।” मन में सोचते हुए अर्नब ने कहा-“ अरे अब तो परिचित हो ही जाऊँगा। वैसे भी तुम शुरू से ऊर्जावान रही हो। एक साथ कई काम संभालने में तुम सिद्धहस्त हो।..ख़ैर अब काम करो क्योंकि कर्म ही पूजा है।”.... “ कार्य तो होगा ही। परंतु कुछ दिन तो मुझे आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी क्योंकि यहाँ का कार्य अभी मेरे लिए नया है।” ये कहकर अविका कार्य में लग गयी।

अर्नब की दशा अब विचित्र हो गयी थी। जिसके ख़्यालों से मुक्त होने के लिए वह वर्षों संघर्ष किया था, उसे अब प्रतिदिन उसी का साक्षात्कार करना पड़ रहा था। अंदर से वह ख़ुद को कमज़ोर महसूस करता था, परंतु बाहर से ख़ुद को दृढ़ प्रदर्शित करता था। एक वक़्त था जब वह अविका के कुछ भी बोलने में हकलाता था, आज वह उच्च स्वर में बात कह देता था। जैसे वह अविका को यह दिखाना चाह रहा हो कि अविका के ठुकराने से वह बिखरा नहीं, अपितु निखरा है।

अविका कार्यालय में प्रतिदिन नियत समय पर आती थी। सामान्यत: उसके वस्त्र हल्के रंग के ही होते थे और मेकअप भी बहुत हल्का ही होता था। अपने कार्यों को पूरी तन्मयता से करती थी। कुछ दिन बाद अर्नब को उसके बारे में जिज्ञासा होने लगी। वह उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में

जानना चाहता था, परंतु पूछता नहीं था।..." मैं क्यूँ पूछूँ। वही कौन सा मुझसे पूछती है।" अर्नब सोचा करता। परंतु वह उसके चेहरे का सूक्ष्म निरीक्षण कर ज्ञात करने का प्रयास अवश्य करता। परंतु अविका के वैवाहिक होने के कोई संकेत चिन्ह उपलब्ध नहीं थे। न ही माँग में सिंदूर और न गले में मंगल सूत्र। परंतु वह सोचता कि आजकल स्त्रियाँ इन प्रतीकों के प्रति विद्रोह कर रही हैं। शायद अविका ने इसी मनोवृत्ति के आधार पर इन्हें प्रयुक्त न किया हो।

अविका एक ख़ुशमिज़ाज महिला थी। ख़ाली वक़्त में अपने सहकर्मियों से वार्तालाप भी कर लेती थी। सबसे खुलकर मिलती थी। बस एक अर्नब भी था, जिसके समक्ष उसकी मुख-मुद्रा परिवर्तित हो जाती थी।

परंतु अर्नब को अविका का खुलापन पसंद नहीं था। वस्तुतः प्रेम आधिपत्यवादी होता है, भले ही वह एकतरफ़ा ही क्यूँ न हो।वह अपने प्रेम को किसी अन्य की ओर उन्मुख होते नहीं देख सकता है। चाहे प्रेम पुरुष का हो अथवा स्त्री का।

अर्नब ऐसी स्थिति में अपने उच्चपदस्थ स्थिति का प्रयोग करता और किसी कार्य के बहाने बुला लेता और संकेत में कार्य में मन लगाने को कहता। लेकिन एक दिन अर्नब थोड़ा स्पष्टवादी हो गया और बोला-" अविका तुम अभी तक नहीं बदली। तुम्हारी चंचलता गम्भीरता में नहीं बदली।"....." जी सर! मैं कोशिश करूँगी गम्भीर होने का। परंतु मनुष्य का स्वभाव परिवर्तित कहाँ होता है। वैसे मुझे जहाँ गंभीर होना चाहिए, वहाँ मैं पूरी तरह गंभीर हूँ-अपने कार्य के प्रति।"अविका ने कहा।...." सही बात है। भाव परिवर्तित हो सकता है, परंतु स्वभाव नहीं।" अर्नब ने कहा।

वैसे अविका के व्यवहार में जितनी चंचलता दिखती थी, उसकी आँखों में उतनी ही ख़ामोशी। इससे अर्नब की जिज्ञासा और बढ़ती जा रही थी। एक दिन अविका अर्नब के पास कुछ डॉक्युमेंट दिखाने गयी थी। अर्नब ने चपरासी से दो कप चाय मँगायी और अविका को चाय पीने को कहा।...." काम कैसा चल रहा है। यहाँ कोई समस्या तो नहीं।" अर्नब ने कहा।..." काम अच्छा ही चल रहा है। सहकर्मी भी बहुत सहयोगी हैं और आप जैसे बॉस के नेतृत्व में तो कार्य अच्छा होना ही है।" अविका ने कहा।....." तुम मुझे तुम कह सकती हो मगर अकेले में। नाम लेकर भी बुला सकती हो।" अर्नब ने कहा।

" और तुम्हारा परिवार कैसा है।" अर्नब ने पूछा। ....," इस बारे में कभी इत्मिनान से बात करेंगे।" अविका ने गर्दन झुकाकर बोला। ...." मेहुल कैसा है।" अर्नब ने पूछा। ये सुनते ही अविका के चेहरे

का भाव पूर्णतया परिवर्तित हो गया। उसने जल्दी से चाय ख़त्म की और कुर्सी से खड़ी होकर बोली-" सर अभी काफ़ी कार्य शेष है, उसे कर लूँ क्योंकि कर्म ही पूजा है।" ये कहते हुए अविका तेज़ी से अपने डेस्क पर चली गयी।

अब अर्नब सोच में डूब गया। आख़िर क्या बात है? अविका ने परिवार के विषय में नहीं बताया और मेहुल के नाम पे तो वो चली ही गयी। तो क्या मेहुल उसके जीवन में अब नहीं रहा या कोई दुर्घटना हो गयी उसके साथ। अविका को देखकर लगता है कि वो दोहरा जीवन जी रही है। बाहर से तो ख़ुशमिज़ाज, मगर अंदर से दुःख में डूबी हुई लगती है।

अर्नब अब अविका के विषय में जानने को और व्यग्र हो उठा। परंतु कैसे पता करे? ये तो केवल अविका ही बता सकती थी या कोई साझा मित्र। परंतु अब कोई साझा मित्र सम्पर्क में नहीं था। अब तो केवल अविका से ही ज्ञात हो सकता था। अब अर्नब के हृदय में अविका के प्रति विद्यमान कठोरता समाप्त सी हो गयी।

अब अर्नब कार्यालय में ख़ुद अक्सर अविका को अपने पास बुलाया करता और ख़ुश रखने की कोशिश करता। इस कोशिश में अर्नब भी गम्भीर से चंचल होने लगा।

एक दिन ऐसे ही दोनों बैठे थे कि अविका ने कहा-" अर्नब इतने दिन हो गए मुझे यहाँ आये, लेकिन मुझे तुमने अपने परिवार से नहीं मिलाया।"...." मिला दूँगा। परंतु मेरे बच्चे बहुत शैतान हैं।" अर्नब ने कहा।..." अरे बच्चे तो शैतानी करते ही हैं। कितने बच्चे हैं?" अविका ने कहा।....." फ़िलहाल तो पाँच है- तीन बेटे और दो बेटियाँ। लेकिन जल्द ही ये संख्या और बढ़ सकती है।" अर्नब ने कहा।...." क्या इतने बच्चे और उसके बाद भी संख्या बढ़ाने का इरादा। एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति ऐसा कैसे कर सकता है। बच्चों की माँ का क्या हाल होगा? उन पर तो तरस खाओ।" अविका ने कहा।....." मैं ही उनका माँ हूँ और मैं ही बाप भी।" अर्नब ने कहा।...." क्या, उनकी माँ कहाँ हैं?" अविका ने चकित होकर पूछा।

" मैं इन बच्चों का जैविक पिता नहीं हूँ। ये सभी अनाथ बच्चे हैं, जिन्हें अब मैं पाल रहा हूँ। मैं ही इनका पिता हूँ और माँ भी। पता है, बच्चों के नाम क्या हैं? अवर्णिका, प्रत्युष, शिवेंद्र, आस्तिक और अद्विका।" अर्नब ने कहा।

“ तो तुम्हारी पत्नी।” प्रश्नवाचक मुद्रा में अविका ने कहा।

“ मैंने विवाह नहीं किया।”अर्नब ने कहा।

अविका-“क्यूँ?”

अर्नब साँस छोड़ते हुए कहा-“ कैरियर की चिंता में इस विषय में सोचने का मौक़ा ही नहीं मिला।”.....मन में सोचा कि इसे कैसे सच्चाई बताऊँ।....”तुमने अपने बारे में नहीं बताया।”

अविका बताऊँगी-“ कभी फ़ुर्सत में कहीं बैठते हैं। बहुत कुछ बताना है।”

अर्नब का मृदु व्यवहार अविका को अच्छा लगने लगा। “ मैंने ग़लत सोचा था कि अर्नब अपने उच्च पदस्थ स्थिति से उसे नीचा दिखाने का प्रयास करेगा और पुरानी कड़वाहट का प्रतिकार करेगा।” अविका सोचा करती।

कुछ दिन बाद शनिवार का दिन था। अविका अर्नब के कक्ष में गयी और पूछी-“ अर्नब कल रविवार है और छुट्टी का दिन भी। अगर तुम्हारे पास वक़्त हो तो, कल कॉफ़ी हाउस में मिलें।कुछ बात करनी है।”....” ज़रूर।” अर्नब ने कहा।

रविवार के दिन १२.०० बजे का समय नियत हुआ। सुबह से ही अर्नब बेचैन था कि अविका क्या बात करेगी। तैयार होकर वो निकल पड़ा और दस मिनट पहले ही कॉफ़ी हाउस पहुँच गया। अविका भी पाँच मिनट बाद ही पहुँच गयी। दोनों कॉफ़ी हाउस के अंदर जाकर बैठ गए।

आज अविका कुछ ज़्यादा ही सज के आयी थी। गुलाबी रंग का वस्त्र, हरा दुपट्टा, कान में हरे रंग की बाली। होंठों पे गुलाबी लिप्स्टिक और माथे पे गुलाबी बिंदी। अर्नब भी आज काफ़ी दिनों बाद दाढ़ी बनाया था, बाल भी कटवाया था। क्रीम कलर का शर्ट और काले रंग का पतलून पहन के आया था। कुछ देर तक दोनों ख़ामोश रहे।

दो मिनट बाद अविका ने ख़ामोशी तोड़ते हुए कहा-“ अर्नब तुम मेरे बारे में जानना चाहते थे ना। आज मैं सब-कुछ बताऊँगी और एक बात भी बताऊँगी।”

अर्नब-“कहो”

अविका-" तुम मेहुल को जानते होगे। वो मेरा दोस्त था। लेकिन कब मेरा जीवन बन गया मुझे पता ही नहीं चल पाया। देखने में अच्छा था, पढ़ने में भी ठीक था। पारिवारिक पृष्ठभूमि भी ठीक ही थी और सबसे बड़ी बात कि वो मेरी छोटी-छोटी बातों का भी ख़याल रखता था। एक लड़की के लिए और क्या चाहिए? तो जब उसने मुझसे प्रणय निवेदन किया तो मैं मना नहीं कर पायी क्योंकि मुझे भी उसके लिए फ़ीलिंग थी।

सबकुछ ठीक चल रहा था। कुछ महीनों बाद मे मेहुल की पूणे में एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में नौकरी लग गयी। वहाँ जाने के बाद कुछ महीने तक मेहुल रोज़ मुझे फ़ोन करता था। मेरा ख़याल भी रखता था। मेरे जन्मदिन पे एक बड़ा बूके और गिफ़्ट भी भेजा था। मैं इस ख़याल में ही खोयी रहती थी कि मुझे मेहुल से ज़्यादा प्यार करने वाला कोई मिल ही नहीं सकता। मेहुल ने वादा किया था कि एक वर्ष बाद हम लोग परिणय सूत्र में बँध जाएँगे।

लेकिन कुछ दिन में उसके फ़ोन आने कम होने लगे। मैं कई बार फ़ोन करती थी तब उठाता था, लेकिन व्यस्तता का बहाना करके जल्द ही फ़ोन काट देता था। मेरे मन में शंका उत्पन्न हुई। रचित भी उसी शहर में नौकरी कर रहा था। मैंने उसे कहा कि ज़रा मेहुल से मिलकर बात करो। रचित जब मेहुल से मिला, तो पहले तो मेहुल टालता रहा। फिर बहुत पूछने पर सच्चाई बतायी कि अब उसके जीवन में शिवांगी आ गयी है। उसने ये भी बोला था कि शिवांगी सुंदर, समझदार और व्यवहारकुशल है। अविका एक अच्छी प्रेमिका हो सकती है, परंतु एक अच्छी पत्नी शिवांगी ही हो सकती है। वो नौकरी भी करती है, तो घर का ख़र्च भी अच्छी तरह चल सकता है। रचित उसे बहुत भला-बुरा कहा, यहाँ तक कि उसने दोस्ती भी तोड़ दी थी।

व्यक्ति कितना उपयोगितावादी होता है ना।.... हमेशा बेहतर विकल्प की तलाश में रहता है। जहाँ कोई दूसरा मिला, पहले को छोड़ा। पहले के हृदय पे क्या बीतेगी, इससे कोई मतलब नहीं होता। मैं तो टूट ही गयी थी। पूरा दिन रोते हुए गुज़रता था। बाहर भी नहीं निकलती थी।मैंने ख़ुद को अंधेरे कमरे में क़ैद कर लिया था। किसी तरह जीवन गुज़र रहा था, अंधकार भरा। कुछ दिन बाद मैंने वक़्त काटने और ख़र्च उठाने के लिए ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया। उसी दौरान मुझे हर्ष मिला। एक ख़ुशमिज़ाज, हाज़िरजवाब, सबको मोहित करने वाला। उससे कुछ दिन में अच्छी दोस्ती हो गयी थी। वो मेरा बहुत ख़याल रखता था। उसे मेरी पुरानी कहानी पता थी। वो मुझे हर पल हँसाने की चेष्टा करता रहता था। कुछ दिन में वो मेरे हृदय के निकट आने लगा। मुझे प्रपोज़ भी किया, जिसे मैंने भी स्वीकार कर लिया। लेकिन बाद में पता चला कि उसकी पहले से ही एक प्रेमिका थी और

उसने मेरी स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए मेरी भावनाओं से खेला था। अब तो मैं दुबारा टूट चुकी थी। "

अविका की आँखों से आँसू के कुछ बूँदे ढलक गयीं।

अर्नब-" अरे ये क्या अविका। जो गुज़र गया उसे भूल जाओ। ख़ुश रहने की कोशिश करो। फिर आगे क्या हुआ।तुमने विवाह नहीं किया?"

अविका-" दो-दो बार धोखा खाने के उपरांत किसी पुरुष पर विश्वास कैसे कर सकती थी। जिन लोगों ने जीवन भर साथ निभाने की क़समें खायीं थीं, वो कुछ वर्ष तो साथ निभा नहीं पाये, तो जो मेरे लिए पूरी तरह अपरिचित होता, उन पर कैसे भरोसा कर सकती थी? तो मैंने विवाह नहीं किया?"

अर्नब-" लेकिन अविका, हर पुरुष एक सा नहीं होता। चलो एक बात आज बता ही दूँ। मैंने तुम्हारी वजह से विवाह नहीं किया। मैं तुम्हें इतना प्यार करता था कि किसी और के साथ जीवन गुज़ारने को सोच ही नहीं सकता था। ऐसा करने पे उसके साथ और ख़ुद के साथ भी अन्याय होता।...हाँ वक़्त के साथ-साथ मेरे मन में यह भी भाव जगा कि केवल एक व्यक्ति को प्यार करने के जगह प्रेम का विस्तार किया जाये। लोगों के आँखों के आँसू पोंछे जायें। लोगों की पीड़ा को धोया जाये। ये शायद तुम्हारी वजह से ही हुआ। तो मैंने अविवाहित रहते हुए इतना बड़ा परिवार बना लिया।"

अविका-" तुम मुझे इतना प्यार करते थे कि आज तक अकेले रहे। काश उस वक़्त मैं तुम्हारे प्यार को समझ पाती। लेकिन तुमने भी तो देर कर दी थी। जब तक तुमने बताया था, मैं मेहुल की हो चुकी थी। लेकिन हाँ अब ये महसूस हो रहा है कि तुमने मुझे इतना प्यार किया कि मैं किसी और की नहीं हो पायी। दो-दो लोग मेरी ज़िंदगी में आकर भी ठहर न सके। मैंने व्यक्ति को पहचानने में भूल कर दी।"

अर्नब-" मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। मेरा प्यार तो एकतरफ़ा ही था, लेकिन हाँ तुमने कैंटीन में मुझे देखकर बुरा मुँह जो बनाया था, वो बहुत बुरा लगा था। मैं कोई बुरा इंसान नहीं था। तुम मुझे ये बोल सकती थी कि मैं पहले से ही किसी की हो चुकी हूँ, तो शायद मैं नहीं टूटता। लेकिन तुमने तो मुझे पूरी तरह परित्याग कर दिया था। अगर दोस्त बना के रखती तो शायद तुम्हारे दर्द

को मैं साझा कर पाया होता। लेकिन कुछ भी अपने हाथ में कहाँ है? तभी तो तुम मेरे होकर भी मेरे न हो सके, मेहुल और हर्ष तुम्हारे होकर भी तुम्हारे न हो सके।"

अविका-"हाँ मेहुल के बारे में एक बात तो बताना ही भूल गयी। जब मंदी का दौर शुरू हुआ तो कंपनियों ने नौकरी से छटनी शुरू कर दी। उसे भी नौकरी से निकाल दिया गया। अब वो अपनी पत्नी के सामने हाथ पसारे रहता है। वैवाहिक जीवन भी तनाव भरा। यहाँ तक कि तलाक़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी। मुझसे सम्पर्क किया था और माफ़ी माँग रहा था और एक होने के लिए गिड़गिड़ा रहा था। मैंने उससे बोला कि तुम्हारे साथ जीवन गुज़ारना तो दूर मैं तुम्हारा चेहरा भी देखना पसंद नहीं करूँगी। व्यक्ति को उसके किये की सज़ा मिल जाती है ना।"..........

..." एक बात तुमसे कहनी है। आई लव यू अर्नब। शायद ईश्वर हम दोनों को मिलाना चाहता था। तभी तो हम दोनों आज तक अधूरे थे। क्यूँ न एक दूसरे को अपना कर पूरे हो जायें।"

अर्नब-"अविका, इसमें कोई दूसरी राय हो ही नहीं सकती कि मेरे अहसासों में तुम थे, तुम हो और तुम ही रहोगे। वक़्त का अंतराल भी इसे नहीं मिटा सकता। लेकिन वक़्त के अंतराल ने जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया है। अब मेरी प्राथमिकता मेरा परिवार है। लोगों की सेवा करना है। इसलिए मुक्त होने के बाद अब मैं फिर से बंधन में नहीं बँध सकता। हम दोनों दोस्त हैं, हमेशा रहेंगे। मैंने जब तुमसे ये तीन शब्द बोले थे तब तुम तुम स्वीकार कर लेते तो हम साथ होते। तुमने आज कहा लेकिन ये अंतराल उन शब्दों को स्वीकारने के बाद भी मुझे तुम्हें जीवन संगिनी बनने की अनुमति प्रदान नहीं करता।"